M.A. Semester- II
Philosophy Paper- VII

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Concept of Cardinal virtues according to Mahatma Gandhi

गाँधीजी के दार्शनिक विचार की एक खास विशेषता यह रही है कि उनकी दार्शनिक विचारधारा का व्यवहारिक पक्ष काफी महत्व का रहा है। उनके दर्शन की इस विशेषता का प्रभाव उनके नैतिक विचार एवं धार्मिक विचार पर भी पड़ा है यही कारण है कि गाँधी का नैतिक विचार काफी व्यवहारिक दिखता है। गाँधी में दार्शनिक विचार की दूसरी खूबी यह है कि उनका दर्शन ईश्वर केन्द्रीत रहा है। यही कारण है कि उनके नैतिक विचार में भी ईश्वर और धर्म अलग नहीं हो पाता। गाँधी ने नीतिशास्त्र तथा धर्म दोनों को अभिन्न माना है गाँधी का विचार है कि धर्म और नीतिशास्त्र एक दूसरे के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। उन्होंने लिखा है कि – "True religion and True morality are inseperable found up with each other religion is to morality, what water is to the said That is sown in the sail."

इस प्रकार गाँधी जी धर्म तथा नीतिशास्त्र दोनों को एक दूसरे का पूरक मानते हैं। गाँधीजी ने अपने दर्शन में six cardinal virtues की चर्चा की है जो इस प्रकार है–

(1) अहिंसा (Non Voilence) - अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है किसी की हिंसा न करना या तकलीफ न देना। अहिंसा का यह अर्थ उपनिषद, बौद्ध दर्शन तथा मनु ने माना है लेकिन अहिंसा शब्द का व्यवहार कठोर अर्थ में भी किया जाता है जैन दर्शन के अनुसार जीवात्मा एक है, जो सभी पेड़, जीव, जन्तुओं वस्तुओं में पाया जाता है दूसरे पदार्थों में भी देखने को मिलता है। जैन धर्म के अनुसार पेड़-पौधे को भी काटना हिंसा का उदाहरण है इसके विपरीत मनु यह मानते हैं कि भोजन तथा बलिदान के लिए यदि कोई जीव जन्तुओं की हत्या भी की जाय तो इसे हत्या नहीं कहा जा सकता।

महात्मा गाँधी का विचार अहिंसा के इन दो Stream विचारों के बीच का है। न तो गाँधी जी जैन के विचारों को मानते हैं, न ही वे मनु के विचारों को स्वीकारते हैं। गाँधीजी ने अपने आश्रम में भी इस बात का जिक्र किया है कि यदि कोई जीव बीमार है, उसे बचने की कोई उम्मीद नहीं है, तब उसे हत्या कर देना हिंसा नहीं होगा। गाँधी जी ने इसे स्वीकारा कि मनुष्य चेतन या अचेतन रूप से जीवों की हत्या करता ही है। गाँधीजी ने अहिंसा में प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान दिया है और बतलाया है कि यही दैविक शक्ति है जिसके आधार पर अहिंसा के कठोर रास्ते पर चला जा सकता है।

गाँधी जी का विचार है कि अहिंसा पर चलना कोई साधारण बात नहीं है। अहिंसा कायरों का अस्त्र नहीं है बल्कि यह वीरों का अस्त्र है क्योंकि वीर व्यक्ति ही धैर्य पूर्वक अहिंसा पर चल सकता है। गाँधी जी ने लिखा है कि - "My Cread of non violence is an active force. It has no room for cowardice and even weakness."

अत: Gandhijee के अनुसार हिंसा कमजोरी ... कायर व्यक्ति ही हिंसा के रास्ते पर

चलते हैं। एक शक्तिशाली व्यक्ति बिना भय के प्रेम के मार्ग पर चलकर अपने दुश्मनों के कठोर हृदय को पिघला सकता है। हिंसा का कारण क्रोध और संवेग है। हिंसा के चलते व्यक्ति भयभीत रहता है। अतः गाँधी जी ने हिंसा जैसे अस्त्र के लिए प्रेम को आवश्यक माना है। उन्होंने लिखा है कि —

"Love those that despitefully use you. It is easy for you to love your friends, but I say to you love your enemies."

पुनः Jesus christ ने भी अहिंसा की चर्चा करते हुए लिखा है कि —

"Love your enemies bless them that curse you do good to them that hate you."

महात्मा गाँधी के अनुसार अहिंसा धर्म है तथा सभी धर्मों का निचोड़ है।
धार्मिक पुस्तकों में इसकी चर्चा मिलती है

"अहिंसा परमो धर्मः
अहिंसा परमम तपः
अहिंसा परमम सत्यम्।
ततो धर्मः प्रवर्तते"।

सत्य (Truthfulness) — Gandhijee के अनुसार सत्य एक दूसरा नैतिक दृष्टिकोण है। गाँधीजी ने सत्य को भी अस्त्र के रूप में स्वीकारा है। सत्य शब्द का व्यवहार दो अर्थों में किया जाता है —
(i) तात्विक (ii) व्यवहारिक तात्विक दृष्टिकोण से सत्य का अर्थ है आध्यात्मिक सत्ता। जबकि व्यवहारिक दृष्टिकोण से सत्य शब्द का व्यवहार नैतिक विचार के लिए किया जाता है। गाँधी जी ने जिस सत्य की चर्चा यहाँ पर की है वह नैतिक सत्य है। सत्य की प्राप्ति के लिए आत्मशुद्धि का होना आवश्यक है। सत्य की प्राप्ति के लिए तभी हो सकती है जबकि

हम राग, द्वेष, क्रोध, मोह, इच्छा आदि पर विजय पायें। गाँधी जी ने यह भी स्पष्ट कर देना चाहा है कि सत्य मीठा होना चाहिए। कड़वा सत्य कई झूठ के बराबर है। ~~उन्होंने लिखा है —~~

~~"सत्यम् ब्रुयात् प्रियं ब्रुयात्~~
~~ब्रुयात् सत्यम् अप्रियम्।~~"

बुद्ध ने भी सत्य को इसी अर्थ में स्वीकारा है। जैन दर्शन तथा बौद्ध दर्शन पंच महाव्रतों में इसे एक मानते हैं। गाँधी जी सत्यवादी थे और उन्होंने अपने जीवन में सत्य के रास्ते पर चलना सीखा।

(3) अस्तेय (Non Stealing) — अस्तेय की धारणा गाँधीजी के दर्शन की एक मुख्य धारणा रही है। अस्तेय शब्द का शाब्दिक अर्थ है चोरी न करना लेकिन उसका वास्तविक अर्थ यह भी होता है कि मन, धन और तन तीनों में किसी से भी ऐसा काम न करना जिससे किसी को तकलीफ पहुँचे, लेकिन विशेष रूप से किसी का धन लेना भी अस्तेय का सही अर्थ है। यहाँ गाँधी जी जैन विचारों से प्रभावित हैं। जैनों का विचार रहा है कि —

> Wealth is the outer life of a person. Therefore to rob of wealth is to rob him of his life."

अर्थात् चोरी करना किसी के जान लेने के बराबर है। गाँधीजी ने यह भी बताया कि अपनी जरूरत से अधिक सामान रखना भी अस्तेय व्रत का उल्लंघन करना है।

(4) अपरिग्रह (Non acceptance) — गाँधीजी के अनुसार अपरिग्रह ~~उनके~~ नैतिक नीतिशास्त्र की खास विशेषता है। अपरिग्रह का अर्थ होता है किसी दूसरे व्यक्ति की चीज को नहीं स्वीकारना अपरिग्रह व्रत में इनका शाब्दिक अर्थ है, लेकिन गाँधी जी ने अपरिग्रह को कठोर शब्द में नहीं लिया। उनके अनुसार सारे व्रत सामान्य व्यक्ति

है वह न तो सत्य का पालन कर सकता है
न अहिंसा का और न ही दूसरे व्रतों का।
इसलिए गाँधी जी ने निर्भयता को एक स्वतन्त्र
cardinal virtues के रूप में स्वीकारा है।
इस प्रकार हम देखते हैं कि
गाँधी जी के अनुसार सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य,
अपरिग्रह और निर्भयता six cardinal virtues है।

X———————————X